International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 65-67

हिंदी भाषा का अंतरराष्ट्रीय संदर्भ

डॉ. जिनो पी. वरुगीस

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मारतोमा कॉलज, चुनगतरा, मलप्पुरम, केरल

प्रस्तावना

विज्ञान एवं तकनीक के बावजूद पूरी दुनिया एक वैश्विक गॉव में तब्दील हो रही हैं । वर्तमान वैश्विक क्षेत्र में भारत की उपस्थिति दिनों-दिन बढती जा रही हैं तदनुसार हिंदी की हैसियत का उन्नयन भी हो रही हैं । ईक्कीसवीं सदी हिंदी भाषा के लिए तीव्र परिवर्तनोंवाली युग हैं । इस संदर्भ में हिंदी माध्यम भाषा, संपर्क भाषा और विश्व भाषा के पद में एक शक्तिशाली भाषा के रूप में उभर आ रही हैं । आज हिंदी भाषा विश्व गंगा बनती जा रही हैं । भूमण्डलीकरण के इस युग में हिंदी का वैश्विक संदर्भ बढ गया हैं, और यह भाषा को एक ग्लोबल रूप प्रदान किया है । हिंदी दिवस को मनाये जानेवाले इस अवसर पर हिंदी भाषा का अंतरराष्ट्रीय संदर्भ पर एक विश्लेषण बहुत आवश्यक है । यह इसके संबन्ध में एक अवलोकन है ।

हिंदी विश्वभाषा के रूप में

वैश्विक संदर्भ में हिंदी विकास के पथ में है । आज वह लगभग सभी देशों और महाद्वीपों में किसी न किसी रूप में व्यवहृत है । वह विश्व के विराट् फलक पर अग्रसर होती जा रही हैं । इसकी सामर्थ्य और प्रबल संभावना को देखते हुए ही अंतरराष्ट्रीय जगत विश्व भाषा के रूप में देखा जाने लगा है । आज बोलनेवालों की संख्या के आधार पर चीनी के बाद विश्व की दूसरी प्रमुख भाषा हिंदी बन गई है । "इस बात को सर्वप्रथम सन् 1999 में मशीन ट्रांसलेशन समिट अर्थात यांत्रिक अनुवाद नामक संगोष्ठी में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो. होजुमि तनाका ने भाषाई अॅकडे पेश करके सिद्द किया हैं । उनके द्वारा प्रस्तुत अॅकडों के अनुसार विश्वभर में चीनी भाषा बोलनेवालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय हैं । अंग्रेज़ी तो तीसरे क्रमॉक पर पहूँच गई है । इसी क्रम में कुछ ऐसे विद्वान अनुसंधित्सु भी सक्रिय है जो हिंदी को चीनी के ऊपर अर्थात् प्रथम क्रमॉक पर दिखाने केलिए प्रयत्नशील हैं" ।[1] उत्तराधुनिकता के परिवेश में हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी अंतरराष्ट्रीय क्षितिज में फायदेमंद सिद्द हो रही है । इसका स्पष्ट प्रमाण है भारतीय रुपए का चिह्न यह निशान भारतीय रूपया के लिए 2010 में स्वीकार किया गया । अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में भारत रुपया का विनिमय अब इस निशान के द्वारा ही होते हैं । फलस्वरूप भारतीय रुपए डॉलर, यूरो के समान हो गया है । साथ ही वैज्ञानिक लिपि देवनागरी को अंतरराष्ट्रीय जगत में मान्यता भी प्राप्त हुई । शिक्षा, समाज और ज्ञान - विज्ञान के क्षेत्रों में विदेशों में भी हिंदी की रुची बढ रही हैं । हमारे देश में विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था है, उसी प्रकार आज विदेशों में भी इसकी व्यवस्था है । विदेशी भाषा के रूप में हिंदी विश्व के 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में पढाई जाती है । अमेरिका, ब्रिटन, आफ्रीका महाद्वीप के देशों, ऐशिया महाद्वीप के देशों में भी हिंदी अध्ययन - अध्यापन की व्यवस्था है । हिंदी साहित्य वहॉ के लोग पढते हैं । कबीरदास, सूरदास, प्रेमचंद आदि साहित्यकारों के संबन्ध में वे परिचित हैं । अमेरिका के वाशिंगटन, टेक्सास, टेम्पिल - फ़िलेडैल्फ़िया जैसे विश्वविद्यालयों में हिंदी पाठ्यक्रम चलाई जाती है । ब्रिटन के विश्वविद्यालयों में भी हिंदी पाठ्यक्रम की व्यवस्था है । कैम्ब्रिज, लंदन जैसे

विश्वविद्यालयों में हिंदी प्रशिक्षण का प्रावधान है । ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में हिंदी सहायक भाषा (Subsidiary Language) के रूप में अध्ययन करने की सुविधा उपलब्ध है । ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस (Oxford University Press) द्वारा प्रकाशित ऑक्सफोर्ड अंग्रेज़ी शब्दकोश (Oxford English Dictionary) में हिंदी के शब्दों को अपनाया गया है, जैसे - “Arre yaar ”(अरे यार), “Churidar ”(चुडिदार), “Bhelpuri” (भेलपुरी) आदि । इस प्रकार पेंगुइन (Penguin) जैसे मल्टी नेशनल प्रकाशन ने भी अब हिंदी में पुस्तकें मुद्रण करना शुरु की है । नार्वे के ओस्लो विश्वविद्यालय में ईरानी व भारतीय परिवार की कई भाषाऐं सिखाने की व्यवस्था है । ऑस्ट्रेलिया में स्कूल के स्तर पर हिंदी का अध्ययन होता है । दक्षिण अफ्रीका के संसद में बजट भाषण भी हिंदी में प्रस्तुत किया गया है । फ़िजी के बाज़ारों में दूकानों का नामपट्ट अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिंदी में भी देख सकते हैं । यूरोप के होटलों में भोजनों की सूची हिंदी में भी प्राप्त है । भारतीयों को संबोधित करते हुए स्वागतकर्मी हिंदी में मेहमानों का स्वागत करते हैं । चीन भी भारत को विशाल बाज़ार समझते हुए हिंदी को अभ्यास क्रम में रखने पर विचार कर रहा है । चीन की राजधानी बीजिंग के राष्ट्रीय ग्रंथालय में भारतीय भाषाओं के अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं । जिनमें तेईस हज़ार पुस्तकें हिंदी की हैं । रूस की राजधानी मास्को में रूसी भाषा से हिंदी में अनुवाद कार्य करने का एक बृहत केंद्र है । इसके अलावा रूस में जवहरलाल नेहरु सांस्कृतिक केंद्र और भारतीय दूतावास के संयुक्त तत्वाधान में इंटरनेट के माध्यम से हिंदी पढाने की कक्षाऐं 24 मई 1999 से शुरु हुई है । कनाडा, स्वीडन, अफ्रीका और ऐशिया के विभिन्न देशों में भी हिंदी का विकास हो रहा है । विदेशों से हिंदी के अनेक पत्र-पत्रिकाऐं भी प्रकाशित हो रहे हैं । उदाहरण के रूप में अमेरिका से ‘विश्वविवेक’, कनाडा से ‘वसुधा’, मॉरीशस से ‘रिमझिम’, इंगलैंड से ‘पुरवाई’ आदि प्रमुख है । हिन्दी भाषा और साहित्य को विश्वव्यापी रूप देने में प्रवासी भारतियों का योगदान सराहनीय है । विदेशों में बसे भारतीय अपने बोलचाल मुख्य रूप से हिंदी में करते हैं । हिंदी साहित्य को विश्वसाहित्य का स्वरूप प्रदान करने में प्रवासी भारतीय लेखक सक्रिय है । अमेरिका से सुरेंद्रनाथ तिवारी , इला प्रसाद ऑस्ट्रेलिया से डॉ.हरदीप संधु कनाडा से अवतंस कुमार, डॉ.भारतेन्दु श्रीवास्तव जर्मनी से अंशुमान अवस्थी मॉरीशस से अभिमन्यु अनत जैसे रचनाकार इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय है । अभियंत्रण जैसे तकनीकी विद्या के बाद अब हिन्दी जैसे शास्त्रीय विद्या के शिक्षकों की आवश्यकता पश्चिमी देशों में बढ रही हैं । हाल ही में प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिका ‘फोर्ब्स’ में यह सूचना दी गयी थी कि आगामी दो वर्षों में यूरोप और अमेरिका के देश लगभग पच्चास हज़ार हिंदी शिक्षकों की नियुक्ति के बारे में सोच रहे हैं । यह वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा प्रबल होने का प्रमाण है । वर्तमान समय में हिंदी का कथा साहित्य भी फ्रेंच, रूसी तथा अंग्रेज़ी साहित्य के समकक्ष हो गया है । इन देशों में संपर्क भाषा के रूप में भी हिंदी विकास पाती जा रही है । अंतरराष्ट्रीय जगत में हिंदी भाषा को प्रतिष्ठित करने में हिंदी सेवी संस्थाऐं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, अमेरिका, विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा और विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस भी हिन्दी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में संवर्द्धन करने के उद्देश्य से कार्यरत है ।

मीडिया और वेब पर हिंदी

मीडिया और वेब पर हिंदी विकास प्राप्त कर रही है । बिज़नेस स्टैंडर्ड, इकोनॉमिक टाइम्स जैसे समाचार पत्र हिंदी भाषा में भी प्रकाशित किए जा रहे हैं । विदेशी चैनलों ने हिंदी भाषा को आत्मसात कर लिया है । बीबीसी, नेशनल ज्योग्राफिक और ईसपीएन जैसे चैंनल हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं । इसके अलावा दक्षिण पूर्व एशिया, मॉरीशस, चीन,जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाडी देशों, आफ्रीका, यूरोपीय राष्ट्रों तक हिन्दी कार्यक्रम उपग्रह चैनल के द्वारा प्रसारित हो रहे हैं और उन्हें दर्शक भी है । हिंदी फिल्में विदेशों में भी अत्यधिक लोकप्रिय है । ‘मॉस्को अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में पहली बार भारतीय फिल्मों का प्रदर्शन किया गया है । इसमें हिंदी की चुनी हुई फिल्मों को शामिल किया गया’ 2। हिंदी अब ई-मेल,

ई-कॉमर्स, ई-बुक तथा फेसबुक, व्हाइसआप जैसे इंटरनेट क्षेत्रों में भी सक्रिय है । माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, सन, आईबीएम, याहू, ओरेकल तथा अमेज़न जैसे मल्टी नेशनल कंपनियॉ और विभिन्न बहुराष्ट्रीय मोबाइल फोन कंपनियॉ हिंदी भाषा को बढावा दे रहे हैं । गूगल में हिंदी केलिए विभिन्न सुविधाऐं उपलब्ध है । अपने सर्च इंजन में हिंदी भाषा को भी शामिल किया गया है साथ ही गूगल ट्रानसलेट, गूगल इनपुट टूल्स, गूगल हिंदी समाचार, गूगल हिंदी कीबोर्ड और गूगल वॉइस में भी हिंदी उपलब्ध है । इसके लिए मशीन लेर्णिग टेकनॉलजी का उपयोग किया जाता हैं । हाल ही में 'अमेज़न ने ' अमेज़न इको ' नामक होम असिस्टण्ड स्मार्ट स्पीकर का परिचय कराया । इसमें हिंदी तथा मराठी, तमिल भाषाओं को भी शामिल किया गया । इससे एलेक्सा वॉइस सेवा (Alexa Voice Service) भारत आने केलिए तैयार हो रहे है' 3 । नोकिया, सैमसंग,मोटोरोला और सोनी जैसे कंपनियों के विभिन्न मोबाइल फोन ब्रांडों में हिंदी की सेवाऐं उपलब्ध हैं । संयुक्त राष्ट्र संघ में भी हिंदी भाषा को मान्यता प्राप्त हुआ है । अटल बिहारी वाजपेयी, पी.वी.नरसिंह राव एवं भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री महामहिम श्री नरेंद्र मोदी ने हिंदी में संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण की है ।

हिंदी का विकास उपरोक्त बातों से सीमित नहीं । साईबर स्पेस के युग में हिंदी साहित्यिक अभिव्यक्ति से लेकर संपूर्ण मानवों के बौद्धिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक उत्थान का पर्याय बनना अनिवार्य हो गया हैं । आज आवश्यकता इस बात पर है कि नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी भाषा को प्रतिष्ठित कर सकें और इसके लिए अथक परिश्रम किया जाए । भविष्य में हिंदी भाषा एक जाज्वल्यमान यथार्थ बन जाऐंगी । इस संदर्भ में श्री विद्या निवास मिश्र का कथन विशेष उल्लेखनीय है – "हिंदी की अंतरराष्ट्रीय भूमिका एक स्वप्न नहीं है, नए विश्व मानव की मॉग है और आनेवाले भविष्य की एक जाज्वल्यमान वास्तविकता है । परन्तु यह वास्तविकता केवल गर्व करने और आत्मसंतुष्ट होने केलिए नहीं है । यह प्रतिष्ठा का बोध जगाने और उस प्रतिष्ठा के अनुकूल एक बडी चुनौती स्वीकार करने का आमंत्रण देती है । हिन्दी भाषी जन स्वाती की प्रतीक्षा न करें, वे अपने तप के ताप से स्वयं को बादल के रूपांतरित करें । धरती को हिंदी के पावस की प्रतीक्षा है "

4. निष्कर्ष रूप में हिंदी रथ को आगे बढाने के लिए अपने दायित्वबोध को गहराईयों तक महसूस करें और सुदृढ इच्छाशक्ति के साथ कोशिश करें तभी हिंदी को सही मायने में विश्वभाषा के रूप में गरिमा प्राप्त हो जायेंगी, और हर दिवस हिन्दी दिवस बन जायेंगी ।

संदर्भ - सूची

1. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय, पृष्ठ संख्या - 2, www.abhivyakti-hindi .org, 07.08.2017, 11.30 am
2. मलयाला मनोरमा, दैनिक, पृ :19, 2017 अगस्त 22 , मलप्पुरम, केरल
3. मलयाला मनोरमा, दैनिक, पृ :11, 2017 अगस्त 1, मलप्पुरम, केरल
4. हिंदी और हम, विद्या निवास मिश्र, पृ : 109, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली - 2, 2004